लिखना बाकी जिलदका है, सो तले तरजुमें लिखना कहे।
जुदियां कर मिलाइयां जंजीर, सो कौन पावे बिना महंमद फकीर।। २१ ।।

किरंतन की बाकी वाणी सनंध के बाद लिखने का काम बाकी है। इसे किरंतन किताब में प्रसंग से प्रसंग मिलाकर किताब लिखी। इतना बड़ा काम इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी के बिना कौन कर सकता है?

पेहेली तारीख पाई बुजरक, मेहेरम थे तिन पाया हक।
इत थें बरस सत्तानवें, तित दूजे जामें जाहेर भए।। २२ ।।

पहले देवचन्द्रजी के तन में आए। तब श्यामा महारानी कहलाए। उनके सत्तानवे साल बाद (सम्वत् १७३५ में) दूसरे जामा में श्री प्राणनाथजी जाहिर हुए (१६३८ से १७३५ तक सत्तानवे वर्ष पूरे होते हैं)।

गैब आवाज हुई इसारत, उतरी इलाही इन सरत।
आठ महीने हुए तिन पर, तब पेहेली किताब भई मयसर।। २३ ।।

मेरता में कलमे से इशारत मिली और फिर अनूपशहर जाते समय सनंध उतरी। आठ महीने तक दिल्ली में औरंगजेब को सन्देश देने के लिए मोमिनों ने युद्ध किया।

ए जो आलम जात खुदाई, गरीबी परेसानी बंदों पर आई।
आगे हुसेन किया बयान, वास्ते रसूल हाथ फुरमान।। २४ ।।

यह जो हक जात मोमिन हैं, औरंगजेब को इमाम मेंहेंदी के आने का सन्देश देने में मोमिनों को बड़े कष्ट उठाने पड़े। हुसैन साहब ने आगे तफसीर हुसैनी में लिखा है कि इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी महाराज के पास ही कुरान का पूरा ज्ञान है, जिससे सारे छिपे रहस्य आप खुद खोलेंगे।

ए दूजे जामे की कही, तहां पांच बुजरकी भेली भई।
आगे दिन केहेने कयामत, सोई खोलों मैं हकीकत।। २५ ।।

रूह अल्लाह श्री श्यामाजी महारानी के दूसरे जामें में इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी के तन में पांच बड़ी शक्तियां इकट्ठी हुईं। श्री धनीजी का जोश, श्यामा महारानी, अक्षर की आत्म, जागृत बुद्धि तथा हुकम इकट्ठे हुए आगे कयामत की बातें कहनी हैं, जिसकी हकीकत मैं आगे कहती हूं।

॥ प्रकरण ॥ १२ ॥ चौपाई ॥ ३७६ ॥

ए सिपारे पेहेले की कही, जंजीर सोलमें की मिलाऊं सही।
तहां लिख्या है इन अदाए, बिना देखाए समझी न जाए।। १ ।।

कुरान के पहले सिपारे में लिखे बयान को सोलहवें सिपारे की चौपाइयां मिलाकर कहती हूं। उसमें इस तरह से लिखा है। जिसे देखे बिना बात समझ में नहीं आती। इन सिपारों में जिकरिया पैगम्बर का किस्सा लिखा है, जो बातूनी में श्री देवचन्द्रजी के ऊपर घटता है।

न था मैं परवरदिगार मेरे, बीच साहेब याद तेरे।
कायदा उमेद गया सब भूल, मुझ ऐसे की द्वा करी कबूल।। २ ।।

श्री देवचन्द्रजी महाराज (श्यामा महारानी) श्री राजजी से कह रहे हैं, हे धाम धनी! मैं संसार में आकर आपको याद करते-करते सभी उम्मीदें भूल गई थी। फिर भी आपने मेरी विनती को स्वीकार किया और मुझे नजरी बेटा मेहराज ठाकुर दिया।

Nijanand App

तुम कबूल मैं तरबियत पाई, खसलत तुमारी इनमें आई।
भी देखो तुम एह वचन, हजरत ईसे जो कहे रोसन।। ३ ।।

श्री श्यामा महारानी (देवचन्द्रजी) कह रही हैं, हे राजजी महाराज! आपने मेरी विनती स्वीकार कर ली, इसलिए मुझे खुशी हुई। आपके सारे गुण मेरे बेटे मेहराज ठाकुर में आ गए हैं (प्राणनाथजी में)। हे सुन्दरसाथजी! हजरत ईसा (श्यामा महारानी) श्री देवचन्द्रजी कहते हैं, इन पर विचार करो।

तेहेकीक मुझको है ए डर, खलक अपनी जो है हाजर।
पीछे मेरे मोहीम खैरात, जो वर पाए करे दीन की बात।। ४ ।।

श्री श्यामा महारानी (श्री देवचन्द्रजी) श्री राजजी से विनती करते हैं, मुझे इनसे डर लगता है कि मेरी जाहिरी औलाद जो बिहारीजी हैं, मेरे मरने के बाद दीन धर्म (निजानन्द सम्प्रदाय) का प्रचार-प्रसार नहीं कर सकेंगे।

पातसाही मेरी बीच उमत, कबूल करने को बजाए ल्यावत।
पीछे मेरे मौत के कहे हजरत, चाहिए खलीफा इस बखत।। ५ ।।

श्री श्यामा महारानी (श्री देवचन्द्रजी) श्री राजजी से कह रहे हैं, मुझे एक ऐसा खलीफा दो जो मरने के बाद दीन की बागडोर सम्भाल सके और मेरे मोमिनों के वास्ते जो आपने हुकम कर रखा है, उसे पूरा करे।

ना जननेवाली मेरी औरत, अठानवे बरसकी मजल है इत।
और बस बकस ना कर, नजीक तेरे तेहेकीक मुकरर।। ६ ।।

श्री श्यामा महारानी (श्री देवचन्द्रजी) श्री राजजी से कह रहे हैं कि उम्र ढलकर अट्ठानवे वर्ष की हो गई है और ऐसा खलीफा पैदा करने की ताकत अब मेरे में नहीं रह गई है। (यह अट्ठानवे वर्ष सम्वत् १६३८ से मन्दसौर में पूरे होते हैं) मुझे कुछ मत दो, केवल एक लड़का दो। यह अब तुम्हारे वश की बात है।

फरजंद मेरे ऐसा होए, साहेब दीन हुकम का सोए।
लेवे मीरास इमामत, लेवे मुझ से हकीकत।। ७ ।।

जिकरिया (श्री श्यामा महारानी देवचन्द्रजी) कह रहे हैं कि लड़का ऐसा देना जो दीन धर्म का काम करे और मेरे हुकम से चले और मेरे से आपकी न्यामत लेकर मेरे अधिकार भी ले ले।

एह मीरास कही मिलकत, इलम की लेवे हिकमत।। ८ ।।

बारह हजार मोमिन ही खुदाई मिल्कियत है और इनको ही दीन का वारिस कहा है। इन भूले मोमिनों को जागृत करने के लिए तारतम का ज्ञान मेरे से ले ले।

।। प्रकरण ।। १३ ।। चौपाई ।। ३८४ ।।

औलाद याकूब कह्या इस्हाक, इनों का कबीला है पाक।
पेहेले कही एही मजकूर, और बिध लिखी कर रोसन नूर।। १ ।।

कुरान के अन्दर इसहाक का लड़का याकूब कहा है। बातूनी में देवचन्द्रजी महाराज इसहाक हैं। मेहराज ठाकुर याकूब हैं। इनका कबीला बारह हजार मोमिन हैं जो पाक-साफ हैं। पहले प्रकरण में यह बात कही है। अब दूसरे तरीके से इसे जाहिर करती हूं।

Nijanand App